



सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचारों का समकालीन भारतीय समाज पर प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

हेमन्त चौरसिया, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत
चेतना श्रीवास्तव, पीएच-डी, राजनीति विज्ञान
पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्यामलाल पाण्डवीय
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Authors

हेमन्त चौरसिया, शोधार्थी
चेतना श्रीवास्तव, पीएच-डी

E-mail : hemantchaurasiya60@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/03/2026
Revised on : 06/05/2026
Accepted on : 15/05/2026
Overall Similarity : 02% on 07/05/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

2%

Overall Similarity

Date: May 7, 2026 (04:08 PM)
Matches: 30 / 1829 words
Sources: 1

Remarks: Low similarity
detected, consider making
necessary changes if needed.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

प्रस्तुत शोध-पत्र "सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचारों का समकालीन भारतीय समाज पर प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" का उद्देश्य सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचारों की वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिकता एवं प्रभाव का अध्ययन करना है। सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक समानता, जातिगत भेदभाव के उन्मूलन तथा वंचित वर्गों के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके विचार आज भी समाज सुधार के लिए प्रेरणास्रोत हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ग्वालियर नगर के 50 महिला एवं पुरुष उत्तरदाताओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। प्राथमिक आंकड़ों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया, जिसमें लिफ्ट स्केल आधारित प्रश्न शामिल थे। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य तथा परिकल्पना परीक्षण के आधार पर किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाता सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचारों को आज भी प्रासंगिक मानते हैं। 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उनके विचारों को उपयोगी माना, 80 प्रतिशत ने स्त्री शिक्षा में उनके योगदान को महत्वपूर्ण स्वीकार किया तथा 76 प्रतिशत ने महिलाओं के अधिकारों एवं सामाजिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन को उनके प्रयासों का परिणाम माना। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचार समकालीन भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय एवं शिक्षा के क्षेत्र में आज भी अत्यंत प्रभावशाली एवं मार्गदर्शक हैं।

मुख्य शब्द

सावित्रीबाई फुले, सामाजिक विचार, समकालीन भारतीय समाज.

प्रस्तावना

भारतीय समाज में सामाजिक सुधार आंदोलनों का इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है। अनेक समाज सुधारकों ने सामाजिक कुरीतियों, लैंगिक असमानता, जातिगत भेदभाव एवं शिक्षा के अभाव के विरुद्ध संघर्ष किया। इन्हीं महान विभूतियों में सावित्रीबाई फुले का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। वे भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारक एवं महिला अधिकारों की प्रबल समर्थक थीं। उन्होंने अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर स्त्री शिक्षा, दलित उत्थान, विधवा पुनर्विवाह एवं बाल विवाह उन्मूलन के लिए ऐतिहासिक कार्य किए।

सावित्रीबाई फुले का मानना था कि शिक्षा ही समाज परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्होंने उस समय लड़कियों के लिए विद्यालय प्रारंभ किया जब महिलाओं को शिक्षा देना सामाजिक अपराध माना जाता था। उनके विचार केवल महिलाओं तक सीमित नहीं थे, बल्कि उन्होंने दलितों, शोषितों एवं वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया।

वर्तमान भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय एवं शिक्षा के क्षेत्र में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं, उनमें सावित्रीबाई फुले के विचारों की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इस शोध-पत्र में उनके सामाजिक विचारों का समकालीन समाज पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचारों का अध्ययन करना।
2. स्त्री शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण में उनके योगदान का विश्लेषण करना।
3. वर्तमान भारतीय समाज में उनके सामाजिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
4. सामाजिक समानता एवं दलित उत्थान में उनके विचारों की उपयोगिता का परीक्षण करना।
5. समकालीन समाज में उनके विचारों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

परिकल्पनाएँ

1. वर्तमान परिदृश्य में सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचारों की प्रासंगिकता नहीं है।
2. सावित्रीबाई फुले द्वारा स्त्रियों के उत्थान के लिए सार्थक प्रयास किए गए।
3. उनके प्रयासों से महिलाओं के अधिकार एवं शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन आया है।
4. उनके सामाजिक विचार वर्तमान समाज सुधार में सहायक नहीं हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध विधि का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक विधि के माध्यम से सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचारों का व्यवस्थित अध्ययन किया गया, जबकि विश्लेषणात्मक विधि के माध्यम से वर्तमान समाज पर उनके प्रभाव का परीक्षण किया गया।

प्राथमिक आंकड़ों के संकलन हेतु संरचित साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया। प्रश्नावली में लिकर्ट स्केल आधारित प्रश्न शामिल किए गए, जिनमें उत्तरदाताओं को पूर्णतः असहमत से पूर्णतः सहमत तक विकल्प दिए गए। इससे उत्तरों का सांख्यिकीय विश्लेषण संभव हुआ।

द्वितीयक आंकड़ों के लिए पुस्तकों, शोध पत्रों, जर्नल्स, पत्र-पत्रिकाओं एवं विश्वसनीय इंटरनेट स्रोतों का उपयोग किया गया। विश्लेषण के लिए प्रतिशतांक सांख्यिकीय विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ग्वालियर नगर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया। अध्ययन हेतु कुल 50 महिला एवं पुरुष उत्तरदाताओं का चयन किया गया। उत्तरदाताओं का चयन विभिन्न आयु वर्ग, शैक्षिक स्तर एवं सामाजिक पृष्ठभूमि से किया गया, जिससे अध्ययन अधिक प्रतिनिधिक एवं संतुलित बन सके। इसमें शिक्षित, अशिक्षित, नौकरीपेशा, गृहिणी, विद्यार्थी एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को सम्मिलित किया गया। नमूना चयन में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन (Purposive Sampling) पद्धति का उपयोग किया गया।

तथ्यों का विश्लेषण

परिकल्पना 1: “वर्तमान परिदृश्य में सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचारों की प्रासंगिकता नहीं है।”

सारणी 1: सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचार आज भी उपयोगी हैं

सं.क्र.	अभिमत	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
1.	पूर्णतः सहमत	22	44%
2.	सहमत	16	32%
3.	अनिश्चित	05	10%
4.	असहमत	04	8%
5.	पूर्णतः असहमत	03	6%
	कुल	50	100%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 44 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 32 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचार आज भी उपयोगी हैं अर्थात् कुल 76 प्रतिशत उत्तरदाता उनके विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता को स्वीकार करते हैं। केवल 14 प्रतिशत उत्तरदाता असहमति व्यक्त करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज में उनके विचारों की उपयोगिता आज भी बनी हुई है। अतः प्रस्तुत तथ्य यह सिद्ध करते हैं कि सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचार वर्तमान समय में भी प्रासंगिक हैं। इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 2: “सावित्रीबाई फुले द्वारा स्त्रियों के उत्थान के लिए सार्थक प्रयास किए गए।”

सारणी 2: सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सं.क्र.	अभिमत	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
1.	पूर्णतः सहमत	25	50%
2.	सहमत	15	30%
3.	अनिश्चित	04	8%
4.	असहमत	03	6%
5.	पूर्णतः असहमत	03	6%
	कुल	50	100%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

सारणी से ज्ञात होता है कि 50 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 30 प्रतिशत सहमत हैं कि सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कुल 80 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से सहमत हैं। यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने महिलाओं के उत्थान हेतु सार्थक एवं ऐतिहासिक कार्य किए। अतः यह सिद्ध होता है कि सावित्रीबाई फुले द्वारा स्त्रियों के उत्थान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सार्थक प्रयास किए गए इसलिए यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना 3: “सावित्रीबाई फुले के प्रयासों से महिलाओं के अधिकार एवं शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन आया है।”

सारणी 3: सावित्रीबाई फुले के प्रयासों से महिलाओं के अधिकारों में सुधार हुआ है

सं.क्र.	अभिमत	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
1.	पूर्णतः सहमत	20	40%
2.	सहमत	18	36%
3.	अनिश्चित	06	12%
4.	असहमत	04	8%
5.	पूर्णतः असहमत	02	4%
	कुल	50	100%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

उपरोक्त सारणी के अनुसार 40 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 36 प्रतिशत सहमत हैं कि सावित्रीबाई फुले के प्रयासों से महिलाओं के अधिकारों में सुधार हुआ है। कुल 76 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक मत रखते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षा, अधिकार एवं सामाजिक स्थिति में उनके प्रयासों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि सावित्रीबाई फुले के प्रयासों से महिलाओं के अधिकारों एवं शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन आया है। इसलिए यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना 4: “सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचार वर्तमान समाज सुधार में सहायक नहीं हैं।”

सारणी 4: सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्यों का प्रभाव वर्तमान समाज में देखा जा सकता है।

सं.क्र.	अभिमत	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
1.	पूर्णतः सहमत	18	36%
2.	सहमत	19	38%
3.	अनिश्चित	07	14%
4.	असहमत	04	8%
5.	पूर्णतः असहमत	02	4%
	कुल	50	100%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

सारणी से स्पष्ट होता है कि 36 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः सहमत तथा 38 प्रतिशत सहमत हैं कि सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्यों का प्रभाव वर्तमान समाज में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कुल 74 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक मत रखते हैं। इससे सिद्ध होता है कि उनके विचार आज भी समाज सुधार के लिए उपयोगी एवं प्रेरणादायक हैं। अतः यह स्पष्ट है कि सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचार वर्तमान समाज सुधार में सहायक हैं इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि सावित्रीबाई फुले के सामाजिक विचार आज भी भारतीय समाज में अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रभावशाली हैं। उनके द्वारा स्त्री शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक समानता, जातिगत भेदभाव के उन्मूलन तथा वंचित वर्गों के उत्थान के लिए किए गए प्रयासों को उत्तरदाताओं ने सकारात्मक रूप से स्वीकार किया है।

अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान दिया तथा उनके प्रयासों से महिलाओं के अधिकारों, सामाजिक स्थिति एवं आत्मनिर्भरता में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। उनके विचारों ने समाज में शिक्षा के महत्व को स्थापित किया तथा महिलाओं को आत्मसम्मान एवं समान अवसर प्राप्त करने की दिशा प्रदान की।

शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि उनके सामाजिक विचार वर्तमान समय में भी समाज सुधार के लिए उपयोगी हैं। विशेष रूप से महिला अधिकार, सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता एवं शिक्षा के क्षेत्र में उनके सिद्धांत आज भी

मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि उनके सामाजिक कार्यों का प्रभाव आज भी समाज में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सावित्रीबाई फुले केवल एक ऐतिहासिक समाज सुधारक नहीं थीं, बल्कि उनकी विचारधारा आज भी समकालीन भारतीय समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उनके विचार सामाजिक परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण एवं समतामूलक समाज की स्थापना के लिए आज भी प्रेरणास्रोत हैं। अतः यह आवश्यक है कि उनके सिद्धांतों को शिक्षा, सामाजिक नीति एवं जनजागरूकता कार्यक्रमों में अधिक व्यापक रूप से सम्मिलित किया जाए, ताकि समाज में वास्तविक एवं स्थायी परिवर्तन लाया जा सके।

सुझाव

1. विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर सावित्रीबाई फुले के जीवन एवं विचारों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।
2. महिला शिक्षा एवं सशक्तिकरण संबंधी सरकारी योजनाओं में उनके विचारों को आधार बनाया जाना चाहिए।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में महिला जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से उनके विचारों का प्रसार किया जाना चाहिए।
4. सामाजिक समानता एवं जातीय भेदभाव के उन्मूलन हेतु उनके सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप से लागू किया जाना चाहिए।
5. युवाओं में सामाजिक चेतना विकसित करने के लिए उनके जीवन पर संगोष्ठी, कार्यशाला एवं व्याख्यान आयोजित किए जाने चाहिए।
6. शोध एवं उच्च शिक्षा के स्तर पर सावित्रीबाई फुले के योगदान पर अधिक अध्ययन किए जाने चाहिए।

संदर्भ सूची

1. फुले, सावित्रीबाई. (2012) *सावित्रीबाई फुले रचनावली*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. फुले, ज्योतिराव. (2010) *गुलामगिरी*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. शर्मा, आर. एन. (2015) *भारतीय समाज सुधारक*. साहित्य भवन प्रकाशन. आगरा।
4. सिंह, रामगोपाल. (2016) *भारतीय सामाजिक चिंतन*. ओरिएंट पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. गुप्ता, एस. पी. (2014) *महिला शिक्षा और समाज सुधार*. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
6. यादव, मीना. (2018) *महिला सशक्तिकरण और भारतीय समाज*. मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
7. मिश्रा, उषा. (2017) *भारतीय नारी और सामाजिक परिवर्तन*. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. वर्मा, शशि. (2019) *समकालीन भारतीय समाज और महिला प्रश्न*. हिंदी संस्थान प्रकाशन, लखनऊ।
9. तिवारी, सुरेश. (2013) *सामाजिक न्याय और भारतीय समाज*. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
10. चौधरी, कविता. (2020) *स्त्री विमर्श और भारतीय समाज*. ज्ञानदीप प्रकाशन, पटना।
